महत्वपूर्ण एवं खास

कांग्रेस ने गवर्नर गंगा प्रसाद को चिट्ठी लिख पेश किया सरकार बनाने का दावा

शिलॉन्ग (**आरएनएस**)। नॉर्थ-ईस्ट के चुनाव नतीजों से घबराई कांग्रेस अब किसी भी हाल में गोवा और मणिपुर की सियासी गलती फिर से दोहराना नहीं चाहती है। ऐसे में पार्टी ने मेघालय में सरकार बनाने के लिए पूरी ताकत झोंक दी है। सबसे पहले कांग्रेस ने अहमद पटेल और कमलनाथ जैसे दिग्गज नेताओं को वहां भेजा और शनिवार देर रात ही राज्यपाल गंगा प्रसाद को चिट्ठी भेजकर सरकार बनाने का दावा भी पेश कर दिया। हालांकि बीजेपी ने भी अपनी ओर से समीकरण बिठाना शुरू कर दिया है। कांग्रेस के बाद 19 सीटों के साथ दूसरे नंबर पर रही नैशनल पीपल्स पार्टी (एनपीपी) से बीजेपी लगातार संपर्क में है और अन्य क्षेत्रीय दलों को साथ लाने की कोशिशें जारी हैं। रिपोर्ट के मुताबिक बीजेपी सूत्रों ने दावा किया है कि उसकी पहल पर एनपीपी और अन्य सहयोगी दलों और 1 निर्दलीय को मिलाकर 34 विधायकों का समर्थन हासिल हो गया है। इस राज्य में सरकार बनाने का जादुई आंकड़ा 31 है। बीजेपी सूत्रों के मुताबिक एनपीपी के 19, बीजेपी के 2, यूडीपी के 6, एचएसपीडीपी के 2, पीडीएफ के 4 और 1 निर्दलीय विधायक का समर्थन मिलने पर सहमति बन गई है। इस संबंध में रविवार शाम तक ऐलान हो सकता है।60 सदस्यीय विधानसभा (अभी 59 सीटों पर ही चुनाव हुए) में 21 सीटें जीतकर मेघालय में सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी कांग्रेस को सरकार बनाने के लिए अभी 10 और विधायकों का समर्थन चाहिए। इसके अलावा, कुछ ही देर में कांग्रेस के विधायक दल की मीटिंग होनी है, जिसमें सभी विधायक अपना नेता चुनेंगे और मुख्यमंत्री पद के लिए उसका नाम आगे किया जाएगा। उम्मीद की जा रही है कि मौजूदा मुख्यमंत्री मुकुल संगमा के नाम पर ही फिर से मुहरलगेगी। रुझानों के वक्त ही ऐसी संभावना देखते हुए कांग्रेस ने अपने पुराने वफादार और वरिष्ठ नेताओं अहमद पटेल और कमलनाथ को शिलॉन्ग भेज दिया था। कांग्रेस पूरी कोशिश कर रही है कि सबसे बड़ी पार्टी होने के बावजूद कहीं सत्ता हाथ से फिसल ना जाए। इस बार पार्टी गोवा और मणिपुर की गलतियों से सबक लेकर काम कर रही है। दूसरी तरफ बीजेपी ने दावा किया है कि वह तीनों राज्यों में सरकार बनाने जा रही है। इसके लिए बीजेपी ने किरेन रिजिजू और अल्फोंस कन्नांथनस को मेघालय का ऑब्जर्वर नियुक्त किया है। केंद्रीय मंत्री जे. पी. नड्डा ने कहा, बीजेपी, उसके गठबंधन सहयोगियों और मित्र पार्टियों को मेघालय और नगालैंड में पूर्ण बहुमत मिला है और हम सरकार बनाने को लेकर आश्वस्त हैं।कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं को इस बात का पूरा अंदाजा है कि पीए संगमा के बेटे कोनार्ड संगमा की पार्टी एनपीपी बीजेपी के साथ आएगी। कोनार्ड की बहन अगाथा और भाई जेम्स भी अपनी-अपनी सीट से चुनाव जीत गए हैं। अब निर्दलीय विधायकों के रुख को देखते हुए ही तस्वीर साफ हो पाएगी कि वह किसका साथ देते हैं।

मेघालय में नए गठजोड़ की होड़ में बीजेपी और कांग्रेस

नईदिल्ली (**आरएनएस**)। सरकार बनाना कभी-कभी मैराथन दौड़ने जैसा हो सकता है. जी हां मेघालय के चुनावी नतीजों में भी कुछ ऐसा ही हुआ है जहां 21 सीटे जीतने के बाद भी कांग्रेस सरकार बनाने की स्थिति में नहीं दिख रही और दूसरी तरफ 2 सीटे जीतकर भी बीजेपी मेघालय में सरकार बनाने की रणनीति बना रही है.मेघालय नतीजो में 21 सीटे जीतकर कांग्रेस एकलौती बड़ी पार्टी के तौर पर सामने आई है. लेकिन इसके बावजूद कांग्रेस को मेघालय में सरकार बनाने के लिए 9 सीटों की ज़रूरत है. नतीजे आते ही कांग्रेस के दो बड़े नेता अहमद पटेल और कमलनाथ मेघालय रवाना हो गए ताकि मनीपुर और गोवा में हुई गलती दोहराई न जाए जहां सबसे बड़ी पार्टी होने के बावजूद बीजेपी सरकार बनाने में कामयाब हो गई थी. अहमद पटेल ने कहा कि इस बार कोई गलती दोहराई नहीं जाएगी.यहां बीजेपी को 19 सीटे जीतने वाली नेशनल पीपल्स पार्टी का सहयोग मिल सकता है क्योंकि नेशनल कांग्रेस पार्टी का केन्द्र और मनीपुर में बीजेपी के साथ गठबंधन है एनपीपी से सहयोग मिलने के बाद बीजेपी के पास भी जादुई आंकड़े से 9 सीटे कम 21 सीटे होंगी. ऐसे में सबकी नज़रे छोटी और निर्दलीय पार्टियों पर है जो कि राज्य में सरकार बनाने में एक बहुत बड़ी भूमिका निभा सकती है.

त्रिपुरा में हार गठबंधन के लिए राहुल की न का परिणाम

कोलकाता (**आरएनएस**)। त्रिपुरा में भाजपा की जीत को तवज्जो नहीं देते हुए मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने शनिवार को कहा कि भगवा पार्टी कभी भी पश्चिम बंगाल और ओडिशा में नहीं जीतेगी. उन्होंने भाजपा को '' ऐसा तिलचट्टा बताया जो पंख लगाकर मोर बनने का सपना देख रहा है.''ममता ने कहा कि त्रिपुरा में परिणाम का कारण माकपा का ''आत्मसमर्पण'' और गठबंधन के लिए कांग्रेस का सहमत नहीं होना है. उन्होंने कहा कि अगर राहुल गांधी तृणमूल कांग्रेस और स्थानीय पहाड़ी दलों के साथ गठबंधन के लिए राजी हो जाते तो परिणाम अलग हो सकते थे. उन्होंने दावा किया कि चुनाव परिणाम से भाजपा को कई राज्यों में होने वाले चुनावों में फायदा नहीं मिलेगा. त्रिपुरा में वामपंथ के 25 वर्ष के शासन का अंत होने और भाजपा की जीत पर प्रतिक्रिया देते हुए ममता ने कहा, ''ऐसे राज्य में जीत पर खुश होने की बात नहीं है जहां महज 26 लाख मतदाता हैं और दो संसदीय सीट हैं. साथ ही वोट का अंतर केवल पांच फीसदी है.''ममता ने कहा, ''चुनावों में माकपा ने अच्छा प्रदर्शन किया है. यह केवल पांच फीसदी मतों का अंतर है. जीत के बावजूद ''पश्चिम बंगाल और ओडिशा में जीत आसान नहीं होगी. भाजपा को कर्नाटक, राजस्थान और मध्यप्रदेश में हार का सामना करना पड़ेगा.

अच्छे प्रदर्शन के बावजूद सिलेक्ट नहीं हुए मयंक अग्रवाल और जलज सक्सेना

नई दिल्ली (**आरएनएस**)। घरेलू मुकाबलों में धमाल मचानेवाले दो खिलाड़ियों को सिलेक्टर्स ने मानों इसबार नजरअंदाज कर दिया। यहां जलज सक्सेना और मयंक अग्रवाल की बात हो रही है। दोनों को न तो श्रीलंका में खेले जाने वाली ट्राई सीरीज में मौका दिया गया और न ही उन्हें ईरानी कप में जगह दी गई। मयंक कर्नाटक के लिए खेलते हैं और जलज केरल के ऑलराउंडर हैं। मयंक ने एक सीजन में सबसे ज्यादा रन बनाए हैं, वहीं जलज ने रणजी ट्रोफी के इस सीजन में सबसे ज्यादा विकेट लिए हैं। इस सीजन में मयंक 2,141 रन बना चुके हैं। इसमें आठ शतक और 9 अर्धशतक शामिल हैं। बावजूद इसके उन्हें निदाहास ट्रोफी के लिए श्रीलंका दौरे के लिए नहीं चुना गया। अगर तर्क यह है कि टीम के पास पहले से कई ओपनर मौजूद हैं, तो फिर टीम में दो विकेटकीपर्स (दिनेश कार्तिक और श्रषभ पंत) को क्यों रखा गया है?वहीं, निदाहास ट्रोफी में दीपक हुड्डा और विजय शंकर को जगह मिली है। दीपक ने मुश्ताक अली और विजय हजारे में 266 और 352 रन बनाए हैं, वहीं विजय शंकर ने इन टूर्नमेंट्स में 152 और 200 रन बनाए। दोनों ही मयंक से काफी पीछे हैं। मयंक के आंकड़े उन्होंने एक सीजन में 30 मैच खेले, जिसमें 2141 रन बनाए। इसमें से 1160 रन रणजी ट्रोफी, 723 रन विजय हजारे ट्रोफी और 258 सय्यद मुश्ताक अली ट्रोफी में बनाए गए हैं। जलज सक्सेना की बात करें तो वे लगातार अच्छा खेल रहे हैं। पिछले छह सालों में एक ऑलराउंडर के रूप में उन्होंने अपने आपको और निखारा है, लेकिन उसका कोई फायदा नहीं हुआ। रणजी ट्रोफी के ताजा सीजन में उन्होंने 522 रन बनाए और 44 विकेट लिए। मयंक को सिलेक्ट न करने पर नैशनल सिलेक्शन कमेटी के चेयरमैन एमएसके प्रसाद ने कहा था, 'किसी भी खिलाड़ी को अपने स्तर को लेकर भ्रम में नहीं होना चाहिए। हमारी समिति प्रत्येक खिलाड़ी से बात करती है। मैंने मयंक से बात की और उन्हें बताया कि घरेलू क्रिकेट में शानदार प्रदर्शन से वह निश्चित तौर पर दावेदारी में शामिल हैं। मैंने उन्हें कहा कि वह लाइन में हैं

फेल होने के डर को मन से निकाला, इसलिए कर पा रहा खुलकर बैटिंग

नई दिल्ली (**आरएनएस**)। भारतीय क्रिकेट में इन दिनों कर्नाटक के खिलाड़ी मयंक अग्रवाल का नाम सबकी जुबान पर चढ़ा हुआ है। घरेलू सीजन में उन्होंने शानदार बैटिंग करते हुए 30 मैचों में 2141 रन बना डाले। इसमें से 1160 रन रणजी ट्रोफी, 723 रन विजय हजारे ट्रोफी और 258 सय्यद मुश्ताक अली ट्रोफी में बनाए गए हैं। धमाकेदार सीजन के बारे में जब मयंक से सवाल किया गया तो उन्होंने कहा कि अब वह डर के एहसास को ही भूल गए हैं और इससे उन्हें अच्छी बैटिंग करने में मदद मिल रही है। 27 साल के इस बल्लेबाज के लिए सीजन शुरुआत से ही अच्छा नहीं था। हैदराबाद के खिलाफ हुए मुकाबले में वह दोनों पारियों में जीरो पर आउट हो गए थे, लेकिन इसके अगले ही मैच में उन्होंने ट्रिपल सेंचुरी जड़ दी थी। इस तरह के गजब कॉन्फिडेंस लेवल पर मयंक ने कहा कि वह फेल होने के डर को मन से निकाल चुके हैं और इससे उन्हें अच्छा प्रदर्शन करने में मदद मिलती है। मयंक ने कहा कि उन्होंने डर को कभी भी अपने ऊपर हावी नहीं होने दिया। दो बार जीरो पर आउट होने के बावजूद, उन्हें टीम में लिया गया इसके लिए उन्होंने कर्नाटक के कप्तान विनय कुमार का शुक्रिया किया। उन्होंने कहा कि दो बार जीरो पर आउट होना याद रहता है, लेकिन अगले मैच में अच्छा प्रदर्शन करने का आत्मविश्वास उसपर हावी हो जाता है। मंयक ने बताया कि वह यह सोचकर मैदान पर उतरते हैं कि उनका बनाया स्कोर उनकी टीम के काम आए। अच्छे प्रदर्शन के बावजूद, मयंक का श्रीलंका दौरे के लिए सिलेक्शन नहीं हुआ। इसपर उन्होंने कहा कि क्रिकेट ने उन्हें वर्तमान में जीना सिखाया है। इससे पहले के एक इंटरव्यू में उन्होंने यह भी कहा था कि सिलेक्शन उनके हाथ में नहीं होता। मयंक ने इसी जनवरी में सगाई की है। इससे जुड़े सवाल पर उन्होंने कहा, जब फील्ड पर सबकुछ ठीक चल रहा हो और फिर निजी जिंदगी में भी चीजें ठीक-ठाक होने लगें, तो अच्छा लगता ही है।

महेंद्र सिंह धोनी ने क्यों छोड़ दिया हेलमेट पर तिरंगा लगाना

नई दिल्ली (**आरएनएस**)। भारतीय खिलाड़ियों को देश के प्रति उनके प्यार के लिए भी जाना जाता है। जिसे खिलाड़ी तरह-तरह से दर्शाते हैं। क्रिकेटर्स की बात करें तो वे अपने हेलमेट पर तिरंगा लगाते हैं। यह ट्रेंड सचिन तेंडुलकर ने शुरू किया था। तब से अबतक यह चल रहा है। वीरेंदर सहवाग, गौतम गंभीर, विराट कोहली सब अपने हेलमेट पर तिरंगा लगाकर खेले हैं। महेंद्र सिंह धोनी भी ऐसा किया करते थे, लेकिन अचानक उन्होंने ऐसा करना बंद कर दिया। अब लोगों के मन में सवाल उठ रहा है कि आखिर धोनी ने तिरंगा लगाना बंद क्यों कर दिया? यह सवाल सोशल मीडिया पर उठा और वहीं इसका जवाब भी मिल गया। सोशल मीडिया प्लैटफॉर्म कोरा के मुताबिक, विकेटकीपिंग की वजह से धोनी ने हेलमेट पर तिरंगा लगाना छोड़ दिया। दरअसल, विकेटकीपिंग के दौरान धोनी को बीच-बीच में हेलमेट लगाना और उतारकर जमीन पर रखना पड़ता है। ऐसे में अगर हेलमेट पर झंडा होगा तो यह उसके अपमान वाली बात होगी, इसलिए धोनी ने तिरंगा लगाना ही छोड़ दिया। खबरों के मुताबिक, जब धोनी तिरंगा लगाते थे तब सोशल मीडिया पर एक शख्स ने उनसे इसकी शिकायत की थी। शख्स ने लिखा था कि खिलाड़ी जिस मैदान पर अक्सर थूक देते हैं वहीं पर तिरंगा लगा हेलमेट रख देते हैं, जो कि गलत है। कथित रूप से इसके बाद से धोनी ने तिरंगा लगाना बंद कर दिया। साल 2011 तक धोनी के हेलमेट पर भी तिरंगा रहता था।

मैच खेलने पाकिस्तान नहीं जाएंगे केविन पीटरसन, किया साफ इनकार

नई दिल्ली ,(**आरएनएस**)। इंग्लैंड के पूर्व कप्तान और फिलहाल पाकिस्तान प्रीमियर लीग (पीपीएल) के लिए खेल रहे केविन पीटरसन ने पाकिस्तान में खेलने के लिए साफ इनकार कर दिया है। पीटरसन क्वेटा ग्लैडिएटर्स की तरफ से खेल रहे हैं और बुधवार को हुए मैच में उनकी बदौलत टीम ने इस्लामाबाद युनाइटेड को हराया। इस टीम के कप्तान मिस्बाह उल हक हैं। पीटरसन ने 34 गेंदों पर 48 रन बनाकर टीम को इस सीजन की दूसरी जीत दिलाई, ऐसे में उनका यह बयान क्वेटा ग्लैडिएटर्स के लिए यह खतरे की घंटी है। क्या है मामला मैच खत्म होने के बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस में पत्रकार ने पीटरसन से पूछा कि अगर टीम फाइनल तक पहुंची तो क्या पीटरसन मैच खेलने कराची जाएंगे? इसपर पीटरसन ने नहीं में जवाब दिया। उन्होंने सोचने समझने तक का वक्त नहीं लिया था। पाकिस्तान जाने में क्या दिक्कत है? बता दें कि 2009 में श्रीलंका की टीम पाकिस्तान दौरे पर थी। वहां उनपर आतंकी हमला हो गया था। तब से कोई बड़ी टीम या खिलाड़ी वहां जाकर खेलने से बचता है। इस वजह से पाकिस्तान सुपर लीग से अधिकतर मैच यूएई और दुबई में हो रहे हैं। बस फाइनल और आखिर के कुछ मुकाबले पाकिस्तान में होने हैं। टूर्नमेंट में क्वेटा ग्लैडिएटर्स और इस्लामाबाद युनाइटेड के साथ-साथ कराची किंग्स, मुल्तान सुल्तान, पेशावर जालमी, लाहौर कलंदर जैसी टीमें हैं।

सचिन की सलाह पर अर्जुन ने मुंबई लीग से नाम वापस लिया

मुंबई (**आरएनएस**)। टी20 मुंबई लीग के एम्बैसेडर मास्टर ब्लास्टर सचिन तेंदुलकर के बेटे अर्जुन तेंदुलकर ने मुंबई टी-20 लीग से अपना नाम वापस ले लिया है. पहले अर्जुन इस लीग में हिस्सा ले रहे थे, अब उन्होंने यह कहकर अपना नाम वापस ले लिया है कि वह अभी इसके लिए तैयार नहीं हैं. यह लीग 11 मार्च से लेकर 21 मार्च तक चलेगी. कहा जा रहा है कि अर्जुन तेंदुलकर ने यह फैसला अपने पिता और महान बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर की सलाह पर लिया है.अर्जुन का अचानक लीग से नाम वापस लेना लीग के आयोजकों के लिए झटका माना जा रहा है. मुंबई के दिग्गज खिलाड़ी पहले से अन्य प्रतियोगिताओं में व्यस्त हैं. कुछ खिलाड़ी श्रीलंका में होने वाली त्रिकोणीय श्रृंखला में खेलने वाले हैं, तो कुछ खिलाड़ी ईरानी ट्राफी. ऐसे में अर्जुन का भी न खेलना आयोजकों की चिंताएं बढ़ा रहा है.गौरतलब है कि सचिन तेंदुलकर कह चुके हैं कि टी20 मुंबई लीग की काफी जरूरत थी क्योंकि यह राज्य के युवाओं के लिए अपनी प्रतिभा दिखाने का अच्छा मंच होगा. इस लीग के एंबेसडर तेंदुलकर ने यहां एक कार्यक्रम के दौरान कहा, ''मेरा मानना है कि इस तरह (टी20 लीग) की चीज की मुंबई क्रिकेट को जरूरत थी. मुंबई क्रिकेट ने हमेशा भारतीय क्रिकेट की अगुआई की है और आंकड़े इसका सबसे बड़ा सबूत हैं. मुझे इस लीग का हिस्सा बनने की खुशी है.'' सचिन का टी20 मुंबई लीग को इतना महत्व देना और अपने बेटे को लीग से दूर रखना लोगों को आश्चर्य में डाल रहा है. टी20 मुंबई लीग अर्जुन के लिए एक अच्छा मौका हो सकती थी. लेकिन अर्जुन इन दिनों अपने पिता की निगरानी में ही काफी जोरदार अभ्यास कर रहे हैं. अर्जुन तेज गेंदबाज हैं और बॉलिंग कोच उनके एक्शन के साथ उनकी फिटनेस पर भी खासा ध्यान दे रहे हैं.चोट से भी परेशान रहे हैं अर्जुन इसकी खास वजह यह है कि पिछले लगभग एक साल से अर्जुन तेंदुलकर इंजुरी से परेशान रहे हैं, लेकिन अब उनका पूरा ध्यान अपनी प्रैक्टिस और फिटनेस पर है. यह भी कहा जा रहा है कि सचिन तेंदुलकर अपने बेटे के लिए शुरू से ही लंबी योजना पर काम कर रहे हैं, इसी लिए हो सकता है कि अर्जुन को लेकर टी20 मुंबई लीग उनकी प्राथमिकता में शायद नहीं है. लेकिन पहले हां कह कर नाम वापस लेना लोगों को काफी हैरान कर रहा है.

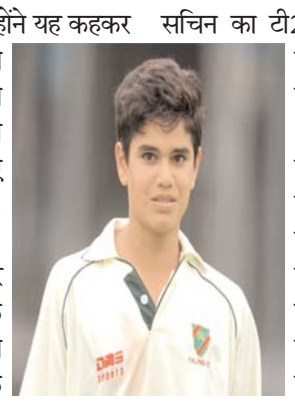

होली से पहले गैस सिलेंडर सस्ता कर सरकार ने दिया तोहफा

नई दिल्ली (**आरएनएस**)। होली से पहले तेल कंपनियों ने गैस सिलेंडर की कीमतों में कटौती कर अपने ग्राहकों को बड़ा तोहफा दिया है. इस बार नॉन सब्सिडी वाले सिलेंडर के साथ ही सब्सिडी वाले सिलेंडर की कीमतों में भी कमी की गई है. साथ ही कामर्शियल यूज में आने वाले 19 किलो के सिलेंडर की कीमतों में भी कटौती की गई है. सिलेंडर की कीमतों में हुई कटौती 1 मार्च से लागू हो गई है. गैस सिलेंडर की कीमतों में की गई यह कटौती इंडियन ऑयल की आधिकारिक वेबसाइट से सामने आई है.47 रुपये की कमी इंडियन ऑयल की ऑफिशियल वेबसाइट पर दी गई जानकारी के अनुसार बिना सब्सिडी वाले 14.2 किलोग्राम के घरेलू सिलेंडर की कीमत में 45.50 रुपए प्रति सिलेंडर से लेकर 47 रुपए प्रति सिलेंडर तक की कटौती की गई है. दिल्ली में बिना सब्सिडी वाले गैस सिलेंडर की कीमत 47 रुपये कम होकर 689 रुपये हो गया है. वहीं कोलकाता में सिलेंडर की कीमत में 45.50 रुपये की कटौती के बाद यह 711.50 रुपये का मिलेगा. इसके अलावा मुंबई में 47 रुपये कम होकर नई कीमतें 661 रुपये पर पहुंच गई हैं. चेन्नई में 46.50 रुपये घटकर अब बिना सब्सिडी वाले सिलेंडर के लिए 699.50 रुपये चुकाने होंगे. सब्सिडी वाला सिलेंडर भी सस्ता सब्सिडी वाले रसोई गैस सिलेंडर की कीमत में इंडियन ऑयल ने ढाई रुपये से भी ज्यादा की कमी की है. अब आपको 1 मार्च से सब्सिडी वाले सिलेंडर के लिए दिल्ली में 493.09 रुपये देने होंगे, पहले इसके लिए 495.63 रुपये देने होते थे. वहीं कोलकाता में दाम 2.53 रुपये कम हो गए हैं, अब नई कीमतों के अनुसार ग्राहकों को 496.60 रुपये का और मुंबई में 2.55 रुपये कम होकर 490.80 रुपये का भुगतान करना होगा. वहीं चेन्नई में सिलेंडर की कीमतों में 2.48 रुपये की कटौती के बाद 481.21 रुपये देने होंगे.कमर्शियल सिलेंडर भी सस्ता 19 किलो वाले कमर्शियल सिलेंडर की कीमतों में भी 77 रुपए से लेकर 80 रुपए तक की कटौती की गई है. दिल्ली में इसका दाम 78.50 रुपए घटकर 1230 रुपये, कोलताता में 77 रुपये घटकर 1270.50 रुपये, मुंबई में 79 रुपये घटकर 1181 रुपये और चेन्नई में 80 रुपये घटकर 1307 रुपये प्रति सिलेंडर हो गया है.

कमजोर शुरुआत, सेंसेक्स 43 अंक, निफ्टी 13 अंकों की कमजोरी के साथ खुला

नई दिल्ली,(**आरएनएस**)। कारोबारी हफ्ते के आखिरी दिन शुरुआती कारोबार में बाजार पर दबाव दिख रहा है. गुरुवार को घरेलू बाजारों की शुरुआत कमजोर रही है. हालांकि, थोड़ी रिकवरी देखने को मिल रही है. लेकिन, बाजार में काफी तेज उतार-चढ़ाव है. ओपनिंग के समय सेंसेक्स और निफ्टी में 0.25 फीसदी की बढ़त नजर आ रही थी. शुरुआती कारोबार में निफ्टी 10,520 के करीब तक पहुंचा, जबकि सेंसेक्स ने 34,270 तक दस्तक दी, लेकिन, फिलहाल बाजार दिन के निचले स्तर पर कारोबार कर रहा है. इससे पहले, सेंसेक्स 43 अंक गिरकर 34,141 अंक पर खुला. वहीं निफ्टी 13 अंक टूटकर 10,480 अंक पर खुला था. मिडकैप-स्मॉलकैप में खरीदारी शुरुआती कारोबार में मिडकैप और स्मॉलकैप शेयरों में थोड़ी खरीदारी देखने को मिल रही है. बीएसई का मिडकैप इंडेक्स करीब 0.5 फीसदी चढ़ा है, जबकि निफ्टी के मिडकैप 100 इंडेक्स में 0.4 फीसदी की तेजी देखने को मिली है. वहीं, बीएसई का स्मॉलकैप इंडेक्स 0.6 फीसदी तक चढ़ा हुआ है.बुधवार को भी गिरा था बाजार बुधवार को ग्लोबल मार्केट से मिले कमजोर संकेतों और जीडीपी डाटा जारी होने से पहले निवेशकों के सतर्क रुख से भारतीय शेयर बाजार गिरावट के साथ बंद हुए थे. सेंसेक्स 162 अंक गिरकर 34,184 अंक पर बंद हुआ था. वहीं निफ्टी 61 अंक टूटकर 10,493 अंक पर क्लोज हुआ था.

एसबीआई ने विभिन्न अवधि की जमा दर 0.75 प्रतिशत तक बढ़ाई

मुंबई ,(**आरएनएस**)। देश के सबसे बड़े बैंक भारतीय स्टेट बैंक ने अपनी खुदरा और थोक जमा दरों को 0.75 प्रतिशत तक बढ़ाया है। बुधवार से ही प्रभावी यह दरें विभिन्न अवधि की जमाओं के लिए हैं। एक करोड़ रुपये तक की खुदरा जमा दर में 0.50 प्रतिशत तक वृद्धि की गई है। एसबीआई के इस कदम से फिक्स्ड डिपॉजिट करनेवाले लाखों लोगों को फायदा होगा। खासकर, रिटायर्ड पर्सन ज्यादा फायदे में रहेंगे। दरअसल, इस वर्ष के केंद्रीय बजट में एफडी में पैसे लगानेवाले रिटायर्ड इन्वेस्टरों के लिए टीडीएस की सीमा 10,000 से बढ़ाकर 50,000 रुपये करके बड़ा फायदा दिया गया था। एक वर्ष लेकिन दो वर्ष से कम अवधि की सावधि जमा (एफडी) की दर में 0.15 प्रतिशत की वृद्धि की गई है। यह 6.25 प्रतिशत से बढ़कर 6.40 प्रतिशत हो गई है। इसी प्रकार दो वर्ष से 10 वर्ष तक की अवधि वाले खुदरा जमा की दर 0.50 प्रतिशत बढ़ाकर 6 प्रतिशत से 6.5 प्रतिशत कर दी गई है। बैंक ने अपनी सावधि थोक जमा दर (फिक्स्ड बल्क डिपॉजिट रेट यानी एफबीडीआर) को भी बदला है। एक वर्ष लेकिन दो वर्ष से कम की अवधि में मच्योर होनेवाली एक करोड़ रुपये से 10 करोड़ रुपये की थोक जमा पर भी ब्याज दर को 0.50 प्रतिशत बढ़ाकर 6.25 प्रतिशत से 6.75 प्रतिशत किया गया है। इसी प्रकार दो वर्ष लेकिन तीन वर्ष से कम की अवधि में मच्योर होनेवाली जमा पर ब्याज दर को 0.75 प्रतिशत बढ़ाकर 6.75 प्रतिशत किया गया है।